हिंदी में आधार पाठ्यक्रम
सत्रीय कार्य
(पाठ्यक्रम के सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.एफ–101
सत्रीय कार्य कोड : बी.एच.डी.एफ–101/टीएमए/2017–18
कुल अंक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्न अनिवार्य है।

1. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए : 10
   (क) लाल-पीला होना
   (ख) नौ दो ग्यारह होना
   (ग) कान का कच्चा होना
   (घ) पेट में चूहे दौड़ना
   (ङ) आँखें दिखाना

2. निम्नलिखित शब्दों के मेल से बनने वाले शब्द बनाइए : 5
   (क) धन् + अभाव
   (ख) दुः + भाव
   (ग) सूर्य + उदय
   (घ) वाक् + ईश
   (ङ) जगत् + नाथ

3. निम्नलिखित शब्दों के दो–दो समानार्थी शब्द बताइए : 5
   (क) कमल
   (ख) रात
   (ग) सूर्य
   (घ) गणेश
   (ङ) नरेश

4. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द बताइए : 5
   (क) असुर
   (ख) सापेक्ष
   (ग) समानता
   (घ) उन्नति
   (ङ) विरोध

5. निम्नलिखित शब्दों के संधिविच्छेद कीजिए : 5
   (क) जितेंद्र
   (ख) गजानन
   (ग) राजतंत्र
   (घ) निराशा
   (ङ) उन्नयन

6 निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग बताइए : 5
   (क) आगमन
   (ख) असफल
   (ग) सुशासन
   (घ) विवाद
   (ङ) असंभव

7. निम्नलिखित शब्दों में प्रत्यय लगाकर अर्थ की भिन्नता बताइए : 5
   (क) मानव
   (ख) समाज
   (ग) बंधु

IGNOU ASSIGNMENT GURU .com/

(घ) भाषा
(ङ) उपनिवेश

8 निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250–300 शब्दों में लिखिए : 5x2=10

(क) 'पूस की रात' कहानी का आशय अपने शब्दों में लिखिए।

(ख) तुलसीदास की कृति रामचरितमानस में वर्णित मार्मिक प्रसंगों का उल्लेख कीजिए।

9. निम्नलिखित पद्यांशों का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए : 5x2=10

क) वह तोड़ती पत्थर।
देखा उसे मैंने इलाहाबाद के पथ पर
वह तोड़ती पत्थर।
कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार,
श्याम तन, भर बँधा यौवन,
नत नयन, प्रिय कर्म रत मन
गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार-बार प्रहार
सामने तरु मालिका अट्टालिका, प्राकार।

ख) चरन कमल बंदौ हरी राई
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै, अंधे को सब कछु दरसाई।।
बहिरौ सुने गूँग पुनि बोलै रंक चलै सिर छत्र धराई।
सूरदास स्वामी करुनामय बार-बार बंदौं तिहि पाई।।

10. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 300 शब्दों में निबंध लिखिए : 10
(क) शहरों में बढ़ता प्रदूषण
(ख) हिंदी धारावाहिकों में स्त्री की छवि
(ग) महात्मा गांधी

11. कंप्यूटर खरीदने के लिए अपनी माँ को पत्र लिखें। इस पत्र में कम्प्यूटर खरीदने की आवश्यकता को रेखांकित करें। 10

12. 'आतंकवाद के बढ़ते' चरण विषय पर 200 शब्दों में एक दैनिक समाचार पत्र के लिए संपादकीय लिखिए। 10

13. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और इसके आधार पर नीचे दिये गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 2x5=10

स्थापत्य कला की तरह मूर्ति कला का आरंभ भी भारत में हड़प्पा सभ्यता से माना जा सकता है। स्थापत्य और मूर्ति दोनों कलाओं में हड़प्पा के बाद के अवशेष प्रायः मौर्यकाल (325–188 ई.पू.) या उससे कुछ पहले के मिलते हैं। मूर्तिकला में भी समय-समय पर परिवर्तन होते रहे हैं और नयी-नयी शैलियाँ अस्तित्व में आती रही हैं। मौर्यकाल की मूर्तिकला में यथार्थता और आकर्षक सौंदर्य अभूतपूर्व है। अशोक कालीन मूर्तिकला इसी युग की है। मौर्यकाल के बाद शुंग (150-73 ई.पू.) और शक-कुषाण काल (ई.पू. पहली सदी– 300 ई. तक) में मूर्तिकला का विकास हुआ। शुंगकला उतनी यथार्थपरक नहीं है। इन दोनों कालों में पत्थर और मिट्टी दोनों का उपयोग हुआ। कुषाणकाल की मथुरा में पाई गई यक्षिणियों की मूर्तियाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं, जिनमें सामाजिक जीवन के आनंद और उल्लास को प्रत्यक्ष देखा जा सकता है।

बुद्ध की समाधिस्थ मूर्तियाँ मूर्तिकला की अमूल्य संपदा हैं। गंधार प्रदेश (अफ़गानिस्तान) में ग्रीक कलाकारों ने अपनी शैली से जिन भारतीय विषयों, अभिप्रायों, प्रतीकों का कलात्मक रूपायन किया, उन्हें गंधार शैली

के नाम से जाना जाता है। कुषाणकाल में ही इस शैली का विकास हुआ था। इस शैली की सभी मूर्तियाँ सिर्फ़ बौद्ध स्थलों से उपलब्ध हुई हैं। बुद्ध मूर्तियाँ गुप्तकाल (275-500 ई.) में भी निर्मित हुईं। इनमें सारनाथ की धर्मचक्र प्रवर्तन मुद्रा में बैठी बुद्ध मूर्ति शिल्पकला एवं सौंदर्य प्रभाव में अद्वितीय है। वस्तुतः मूर्तिकला के विकास में बौद्ध धर्म का योगदान उल्लेखनीय है।

हिंदू धर्म में मूर्ति पूजा वैष्णव भक्ति का मुख्य आधार रही है। ईश्वर के साकार रूप की आराधना के लिए मूर्ति को ही ईश्वर मानकर उसकी पूजा-अर्चना वैष्णव भक्ति का मुख्य अंग है। ईश्वर के विभिन्न अवतारों तथा अन्य देवी-देवताओं की मूर्तियों का निर्माण काफी लंबे समय से होता रहा है। दूसरी-तीसरी शताब्दी के बाद से हिंदू धर्म के पौराणिक देवी-देवताओं की मूर्तियाँ मिलने लगती हैं। शिव, पार्वती, विष्णु, लक्ष्मी आदि की मूर्तियाँ इस दृष्टि से दर्शनीय हैं।

1. भारत में मूर्तिकला का आरंभ कब से माना जाता है।
2. मौर्य काल और कुषाण काल की मूर्ति कला का अंतर बताइए।
3. गंधार शैली की विशेषताएँ बताइए।
4. बुद्ध की मूर्तियों के निर्माण में किन-किन शैलियों का इस्तेमाल हुआ?
5. भारतीय मूर्तिकला के विकास में हिंदू धर्म के योगदान का उल्लेख कीजिए।

IGNOU ASSIGNMENT GURU http://www.ignouassignmentguru.com/

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

प्रश्न 1. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए–

(क) लाल-पीला होना

उत्तर–*बहुत गुस्सा होना*–शत्रु को देखकर वह लाल-पीला हो गया।

(ख) नौ दो ग्यारह होना

उत्तर–*भाग-जाना*–पुलिस को देखर चोर नौ-दो ग्यारह हो गए।

(ग) कान का कच्चा होना

उत्तर–*जल्दी बातों पर विश्वास करना*–हरीश बहुत कान का कच्चा है।

(घ) पेट में चूहे दौड़ना

उत्तर–*बहुत भूखा होना*–आज तो राम के पेट में बहुत चूहे दौड़ रहे हैं।

(ङ) आंखे दिखाना

उत्तर–*धमकाना/मना करना*–गलती करने पर मां अपने बेटे को आंखे दिखाने लगीं।

प्रश्न 2. निम्नलिखित शब्दों के मेल से बनने वाले शब्द बनाइए–

(क) धन् + अभाव

उत्तर–धनाभाव

(ख) दुः + भाव

उत्तर–दुर्भाव

(ग) सूर्य + उदय

उत्तर–सूर्योदय

(घ) वाक् + ईश

उत्तर–वाकीश

(ङ) जगत् + नाथ

उत्तर–जगन्नाथ

प्रश्न 3. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो समानार्थी शब्द बताइए–

(क) कमल

उत्तर–जलन, राजीव

(ख) रात

उत्तर–निशा, रजनी

IGNOU ASSIGNMENT GURU http://www.ignouassignmentguru.com/

(ग) सूर्य

उत्तर–रवि, भास्कर

(घ) गणेश

उत्तर–गजानन, लम्बोदर

(ङ) नरेश

उत्तर–नृप, राजा

प्रश्न 4. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द बताइए–

(क) असुर

उत्तर–सुर

(ख) सापेक्ष

उत्तर–निरपेक्ष

(ग) समानता

उत्तर–असमानता

(घ) उन्नति

उत्तर–अवनीति

(ङ) विरोध

उत्तर–समर्थन

प्रश्न 5. निम्नलिखित शब्दों के संधिविच्छेद कीजिए–

(क) जितेंद्र

उत्तर–जी + इन्द्र

(ख) गजानन

उत्तर–गज + आनन

(ग) राजतंत्र

उत्तर–राज + तंत्र

(घ) निराशा

उत्तर–निः + आशा

(ङ) उन्नयन

उत्तर–उन् + नयन

प्रश्न 6. निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग बताइए–

(क) आगमन

उत्तर–'आ' उपसर्ग है।

(ख) असफल

उत्तर–'अ' उपसर्ग है।

(ग) सुशासन

उत्तर–'सु' उपसर्ग है।

(घ) विवाद

उत्तर–'वि' उपसर्ग है।

(ङ) असंभव

उत्तर–'अ' उपसर्ग है।

प्रश्न 7. निम्नलिखित शब्दों में प्रत्यय लगाकर अर्थ की भिन्नता बताइए–

(क) मानव

उत्तर–मानवता–मानव एक व्यक्ति विशेष के संदर्भ में प्रयुक्त होता 'सप्ताशब्द' है, जबकि मानवता संपूर्ण मानव के लिए प्रयुक्त होकर 'विशेषण' बना है।

IGNOU ASSIGNMENT GURU http://www.ignouassignmentguru.com/

(ख) समाज

उत्तर–सामाजिक–समाज एक समुदाय के लिए प्रयुक्त 'संज्ञा' शब्द है जबकि सर्वाधिक 'विशेषण' के रूप में प्रयुक्त होता है।

(ग) बंधु

उत्तर–बंधुता/बंधुत्व–बंधु व्यक्ति विशेष संज्ञा है तथा बंधुता संपूर्णता को व्यक्त करता हुआ 'विशेषण' को दर्शाता है।

(घ) भाषा

उत्तर–भाषिक/भाषाई–भाषा 'संज्ञा' के रूप में प्रयुक्त है जबकि वाक्य विशेषण है।

(ङ) उपनिवेश

उत्तर–उपनिवेशिक–उपनिवेश एकवचन, संज्ञा के रूप में प्रयुक्त होता है जबकि औपनिवेशिक बहुवचन के रूप में 'विशेषण' शब्द है।

प्रश्न 8. निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250-300 शब्दों में लिखिए–

(क) 'पूस की रात' कहानी का आशय अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर–प्रेमचन्द आरम्भ में आदर्शवादी थे, परन्तु बाद में यथार्थवादी बन गये। प्रस्तुत कहानी उनकी यथार्थवादी कहानी है। इस कहानी को लिखने का उनका मुख्य उद्देश्य उस समय के सामाजिक व राजनैतिक यथार्थ का वर्णन करना था।

यह कहानी ऐसे समय में लिखी गई थी, जिस दौरान देश परतंत्र था और आजादी के लिए संघर्ष चल रहा था। देश में उस समय विद्यमान राजनैतिक व सामाजिक वास्तविकता का सजीव चित्रण हमें "पूस की रात" कहानी में मिलता है। उस दौरान महात्मा गाँधी स्वतन्त्रता संग्राम में सक्रिय थे। यह घटना लगभग 1930 के आसपास की है।

देश में जमींदारी प्रथा थी। किसानों को जमीन का मालिकाना हक न था। अंग्रेजी सरकार इन जमींदारों के द्वारा लगान वसूल करती थी। फसल चाहे अच्छी हो या खराब, सरकारी खजाने में लगान जमा करना आवश्यक था। सामाजिक बन्धनों से बंधा हुआ किसान अत्यन्त गरीबी से जकड़ा हुआ था। किसान अशिक्षित थे, परन्तु ईमानदार थे। कड़ी मेहनत के बावजूद भी उन्हें दो जून की रोटी नसीब न हो पाती थी। किसान तन के कपड़े व भूखे पेट की परवाह न करते हुए भी स्वतन्त्रता संग्राम में कूद पड़े थे। फसलें इतनी अच्छी न होती थीं कि जमींदार की लूट भी सहें और किसान का पेट भी भरें। अन्य खर्चों को पूरा करने के लिए उसे सूदखोरों के चंगुल में फँसना पड़ता था।

सूदखोर मनमाना ब्याज वसूलते थे। हर तरफ शोषण ही शोषण था। एक बार लिया हुआ कर्ज सारे जीवन न उतर पाता था। कर्ज पीढ़ी दर पीढ़ी चलते थे। किसान अभावों की जिन्दगी काटता था और सूदखोर जमींदार विलासिता का जीवन व्यतीत करता था। किसानों की अशिक्षा उनकी सबसे बड़ी दुश्मन थी। वे शोषण के दुष्चक्र में फंसे हुए थे।

प्रेमचन्द ने प्रस्तुत कहानी में इन बातों का मार्मिक व वास्तविक वर्णन किया है।

हल्कू भी एक ऐसा ही अभागा किसान है, जो अपनी अशिक्षा व गरीबी के कारण सूदखोरों के चंगुल में फँस गया है। उसकी सारी कमाई इन शोषकों द्वारा लूट ली जाती है। उसके पास तन ढकने को कंबल भी नहीं है। वह रात-रात भर ठण्ड में खेत पर रहकर फसलों की रखवाली करता है, उसकी उपज को सूदखोर व जमींदार खाते हैं। हल्कू निराशावादी हो जाता है। वह सोचता है कि जिस फसल की रखवाली करके भी उसे कुछ नहीं मिलता, तो उसके उजड़ जाने से उसे क्या नुकसान है। अतः वह स्वयं को नियति के हवाले कर देता है।

प्रेमचन्द अपनी कहानियों में ग्राम्य जीवन की समस्या को प्रस्तुत करते हैं तथा उसका निर्णय पाठकों पर छोड़ देते हैं।

(ख) तुलसीदास की कृति रामचरितमानस में वर्णित मार्मिक प्रसंगों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर–एक सफल रचनाकार वही हो सकता है, जिसे कथा के मार्मिक स्थलों की उपयुक्त पहचान होती है। रामचरितमानस में तुलसीदास ने अपनी इस शक्ति का बखूबी परिचय दिया है। रामकथा के अंतर्गत आने वाले कुछ मार्मिक प्रसंग इस प्रकार से हैं–

राम-सीता का पुष्पवाटिका में मिलन, राम वन गमन, चित्रकूट पसंग, सीता-हरण, लक्ष्मण-शक्ति आदि। तुलसीदास को इन स्थलों की बखूबी पहचान थी। ऐसे स्थलों पर उनका मन बहुत अधिक रमा है और उन्होंने बड़े विस्तार से इन स्थलों पर कथा का वर्णन किया है। पुष्पवाटिका में राम-लक्ष्मण के सौंदर्य क अवलोकन करती हुई सीता को वे कैसे लगे इसका वर्णन करते हुए तुलसी कहते हैं–

लता भवन में प्रगट भए तेहि अवसर दोउ भाइ।
विगसे जनु विधु विमल दोइ जलद पटन विचाइ॥

तुलसीदास जी का हृदय पक्ष इन अवसरों पर प्रबल हो रहा है–रामचरितमानस के ये वर्णन पाठकों को इतने अधिक रुचिकर लगते हैं कि वे इन्हें बार-बार पढ़ना-सुनना चाहते हैं। ऐसे स्थलों को पढ़कर पाठक रोमांचित हो उठते हैं और उनकी आंखो से अश्रुधारा प्रवाहित होने लगती है। कवितावली एवं गीतावली में भी तुलसीदास ने इस मार्मिक स्थलों को बड़ी कुशलता से प्रस्तुत किया है।

तुलसीदास जी ने उन कथा प्रसंगों को कोई महत्त्व नहीं दिया, जिनमें घटना का उल्लेख मात्र करने से काम चल जाता है। जब राम लंका विजय करके अयोध्या लौटे तो तुलसी ने उस यात्रा का वर्णन मात्र दो चार चौपाइयों में कर दिया है। तुलसी ने अपनी अनोखी सूझ-बूझ का परिचय देते हुए 'मानस' की प्रबंध पड़ता ये चार चांद लगा दिए हैं। जो प्रसंग उन्हें अरूचिका एवं अशोचनीय लगे उनको बड़ी चतुराई से वर्णन से बाहर निकाल दिया। जैसे-शिव-पार्वती का विवाह होने के उपरान्त उनकी संयोगकालीन काम-क्रीडाओं का वर्णन करने से बचने हेतु ये कहते हैं कि–

''जगत मात पितु सम्भु भवानी। तेहि सिंगार न कहहुं बखानी।।
करहिं विविध विधि भोग विलासा। गगन समते कमहिं कैनासा।।

प्रश्न 9. निम्नलिखित पद्यांशों का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए–

(क) वह तोड़ती पत्थर।

देखा उसे मैंने इलाहाबाद के पथ पर
वह तोड़ती पत्थर।
कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके बैठी हुई स्वीकार,
श्याम तन, भर बँधा यौवन,
नत नयन, प्रिय कर्म रत मन
गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार-बार प्रहार
सामने तरु मालिका अट्टालिका, प्रकार।

उत्तर–संदर्भ–प्रस्तुत कविता निराला जी द्वारा रचित 'अनामिका' काव्य-संग्रह से ली गई है। इस कविता में कवि ने एक मजदूर औरत का चित्रण किया है। इस कविता उन्होंने दिखाया है कि हमारे समाज में कितनी आर्थिक विषमता है कि एक तरफ एक स्त्री धूप में कार्य कर रही है, जबकि दूसरी तरफ धूप स्वप्न में भी नहीं दिखाई देती।

व्याख्या–कवि निराला जी कहते हैं कि मैंने इलाहाबाद के रास्ते में एक स्त्री को सड़क पर पत्थर तोड़ते हुए देखा, जो अपने पत्थर तोड़ने के कार्य में लगी हुई थी। गरीबी क्या-क्या कार्य करवा देती है, क्योंकि स्त्री का स्वरूप ऐसे काम करने का नहीं है। परन्तु आर्थिक विषमता के कारण उसे यह कार्य भी करना पड़ रहा है। वहाँ कोई छायादार पेड़ नहीं था। जहाँ वह काम कर रही थी, उस जगह धूप थी। वह रूप में साँवले रंग की थी और यौवन से भरपूर थी अर्थात् उसका शारीरिक सौन्दर्य अच्छा था। उसका मन अपने कार्य में इतना लीन था, जिसके कारण उसकी आँखें भी नीचे झुकी हुई थी। उसके हाथ में एक भारी हथौड़ा था, जिससे वह बार-बार पत्थरों पर चोट कर रही थी। परन्तु दूसरी तरफ उसी के सामने बड़ी-बड़ी अट्टालिकायें, महल व ऊँची-ऊँची दीवारें व पेड़ों की कतारें खड़ी हुई थीं। कवि इन पंक्तियों में यह बताना चाहता है कि हमारे देश में मजदूर प्रमुख हैं। सारे कार्य उन्हीं के परिश्रम से होते हैं। सभी भवनों को वे ही बनाकर तैयार करते हैं, परन्तु उनको बैठने तक के लिये जगह नहीं मिलती। वे बेचारे धूप में ही कार्य करते हैं। यह चित्रण समाज में व्याप्त आर्थिक विषमता को दिखाता है। उस समय सूर्य काफी चढ़ चुका था। गर्मियों के दिन थे और धूप तेजी से पड़ रही थी। सूर्य अपने पूरे जोश के साथ चमक रहा था। लू चल रही थी, जो गर्मी व धूप के कारण शरीर को जला रही थी। सूर्य इतना तेज था कि धूप से पृथ्वी भी जलती दिखाई दे रही थी। दोपहर का समय था। जो धूल फैली हुई थी, वह भी गर्मी के कारण चिनगारी बन गई थी और सभी चीजों को जला रही थी। कवि के कहने का तात्पर्य यह है कि उस समय धूप में बैठकर कार्य करने का मौसम नहीं था। गर्मी पूरे जोर से पड़ रही थी, जो आग के समान शरीर को जला रही थी, परन्तु फिर भी सामाजिक व आर्थिक भेदभाव ने उस स्त्री को काम करने को विवश कर दिया था। कवि कहता है कि मैं उस स्त्री की तरफ देख रहा था। उसी समय उसने भी एक बार मेरी तरफ देखा और फिर वह उन ऊँचे-ऊँचे महलों की तरफ देखने लगी। इस बीच में थोड़ी देर के लिये उसका कार्य रुक गया अर्थात् उसका मन मेरी ओर व भवनों की तरफ गया और उसका ध्यान अपने प्रिय कार्य से टूट गया। जब उसने यह देखा कि मेरे चारों तरफ कोई दूसरा व्यक्ति नहीं है तो उसने मुझे ऐसी दृष्टि से देखा जैसे किसी को बहुत मार पड़ी हो, परन्तु वह रो भी न सका हो। कवि यहां पर गरीबी की उस पराकाष्ठा पर पहुँच गया है, जहाँ मनुष्य आर्थिक अन्तर्द्वन्द्व को समझता तो है, परन्तु कुछ कर नहीं सकता। उसे यह पता है कि ये महल तेरे ही परिश्रम से बने हैं, परन्तु ये तेरे लिए नहीं हैं। निराला जी कहते हैं कि उस समय मैंने एक ऐसी आवाज

को सुना, जिसे पहले कभी नहीं सुना था। थोड़ी देर के बाद उसके शरीर में कंपन-सी हुई और उसके माथे से पसीने की बूँदें गिरने लगी और फिर वह अपने कार्य में लीन हो गयी अर्थात् पत्थर तोड़ने लगी। मुझे ऐसे लगा जैसे वह कह रही हो कि मैं तो एक पत्थर तोड़ने वाली मजदूर औरत हूँ।

विशेष–निराला जी ने इस कविता में मजदूर औरत का चित्रण किया है। उन्होंने यह बताया है कि आर्थिक भेदभाव के कारण मनुष्य को वे कार्य भी करने पड़ते हैं, जो उसकी ताकत से बाहर होते हैं।

(ख) चरण कमल बंदौ हरी राई
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै, अंधे को सब कछु दरसाई॥
बहिरौ सुने गूँग पुनि बोलै रंग चलै सिर छत्र धराई।
सूरदास स्वामी करुनाम बार-बार बंदौं तिहि पाई॥

उत्तर–संदर्भ–उपर्युक्त पद्य सूरदास द्वारा रचित "विनय" से लिया गया है। मंगलाचरण के इस पद में वे प्रभु की अद्भुत शक्ति सामर्थ्य का वर्णन कर रहे हैं।

व्याख्या–मैं भगवान श्रीकृष्ण के कमल जैसे चरणों की वन्दना करता हूँ, जिनकी कृपा से लंगड़ा पर्वत लांघ जाता है, अन्धे को सब-कुछ दिखाई देने लग जाता है, बहरा सुनने लगता है और गूंगा बोलने लग जाता है। गरीब व दरिद्र व्यक्ति राजाओं की तरह सिर पर छत्र धारण कर लेते हैं अर्थात् उनकी कृपा से थोड़ी ही देर में गरीब व्यक्ति अमीर बन सकता है। सूरदास जी कहते हैं कि भगवान बड़े कृपालु हैं, मैं उनकी बार-बार वन्दना अर्थात् प्रार्थना करता हूँ।

भावार्थ–भगवान की कृपा अपरंपार है। वे सारे दु:खों को हरने वाले हैं। हमें हमेशा उनका ध्यान करना चाहिए।

विशेष–विषय अलंकार की सहायता से प्रभु की अद्भुत शक्ति का परिचय प्रस्तुत किया गया है।

प्रश्न 10. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 300 शब्दों में निबंध लिखिए–

(क) शहरों में बढ़ता प्रदूषण

उत्तर– **शहरों में बढ़ता प्रदूषण**

प्रदूषण का अर्थ होता है–विषैलापन। प्राकृतिक वायु, जल, भोजन का अपवित्र होना प्रदूषण है। वास्तव में प्रदूषण विज्ञान की देन है। प्राचीन काल में इस शब्द का कभी नाम नहीं सुना जाता था, लेकिन ज्यों-ज्यों वैज्ञानिक आविष्कार बढ़ते गए, त्यों-त्यों इस शब्द का प्रचलन बढ़ता गया। पुराने समय में सभी चीजें स्वच्छ थीं। धरती उपजाऊ थी व वातावरण निश्चिंत व स्वच्छ था। ऋतुएँ भी निश्चित व क्रमबद्ध थीं। परन्तु वैज्ञानिक उपकरणों, विस्फोटों व औद्योगिक उन्नति ने सभी चीजों को अनिश्चित व अपवित्र बना दिया है।

देश की जनसंख्या बढ़ने लगी और इसी के साथ-साथ वैज्ञानिक प्रगति भी होने लगी। सभी क्षेत्रों में मशीनों का प्रयोग होने लगा है। उपजाऊ भूमि तैयार करने के लिए वनों की संख्या समाप्त होने लगी है। मशीनों के कूड़े-कचरे को जलाए जाने या भराव के काम में लिया जाने लगा, जिससे स्वच्छ वायु का अभाव हो गया। घरों में प्रयोग किये जाने वाले उपकरणों, स्टोव, कारखानों, मोटर वाहनों, रेल के इंजनों से निकलने वाली गैस ने सारे वातावरण को दूषित कर दिया है। दिल्ली की संकरी सड़कों पर सायं के समय ऐसा धुआँ फैला रहता है कि दम घुटने लगता है, क्योंकि वायु स्वच्छ नहीं होती है। स्वच्छ वायु के न मिलने पर हृदय रोग बढ़ जाते हैं। खाँसी, दमा, फेफड़े का कैंसर, जुकाम आदि इसी के प्रभाव हैं। समय-समय पर लापरवाही के कारण भोपाल जैसी घटनाएँ तो मात्र एक उदाहरण हैं।

कारखानों से निकलने वाला गन्दा पानी, घर का गन्दा पानी–इन सभी को नदियों व समुद्र में डालने से पानी जहर बन जाता है। सभी शहरों के भूमिगत सीवर नदियों में गिरते हैं और पानी को जहरीला बना देते हैं। पानी के प्रदूषण से चर्म रोग, भोजन संबंधी व आमाशयिक विकार पैदा हो जाते हैं। जहरीले पानी से सिंचाई करने पर अन्न, फल, सब्जी आदि भी प्रभावहीन हो रहे हैं। समय-समय पर किये जाने वाले विस्फोट समुद्र में पानी व मछलियों को प्रदूषित कर देते हैं। समुद्र में तेल के बिखरने जैसी घटना से अगर प्रदूषण नहीं फैलेगा, तो क्या होगा? ताप, शोर व दुर्गन्ध भी प्रदूषण को प्रभावित करते हैं। आज ताप बिजलीघरों से, परमाणु भट्ठियों से इतनी ऊष्मा निकलती है कि जलवायु का सन्तुलन बिगड़ जाता है। पेड़-पौधों को हानि पहुँचती है और मनुष्य मृत्यु शैया पर विश्राम करने चला जाता है। ऊर्जा के क्षेत्र में केवल बिजली ही ऐसी है, जिसके प्रयोग से प्रदूषण नहीं होता, परन्तु बिजली को पैदा करने में जो कोयला जलता है, उससे प्रदूषण फैलता है। प्रदूषण का मौसम पर प्रभाव पड़ता है। ईंधन जलने से वायुमण्डल में कार्बन-डाईऑक्साइड गैस इतनी बढ़ रही है कि कुछ दिनों में मनुष्य का जीना मुश्किल हो जायेगा, क्योंकि वायुमण्डल में जहर ज्यादा हो जायेगा। प्रदूषण नियंत्रण के लिए वैज्ञानिक आविष्कारों को नष्ट न करने, बल्कि उनका विकल्प ढूँढने की जरूरत है। इसके लिए जगह-जगह वन-उपवनों का जाल

बिछाने की जरूरत है। कारखानों व अन्य छोटी इकाइयों को शहर से दूर रखने की योजना बनानी होगी। कूड़े-कचरे को नदियों में न डालकर कोई दूसरा तरीका निकालना पड़ेगा और वायु-प्रदूषण को रोकना होगा। अंत में हम यह कह सकते हैं कि शुद्ध जल, वायु, भोजन मानव-जीवन के लिए अनिवार्य है। इसकी प्राप्ति के लिए प्रदूषण की समस्या सभी राष्ट्रों के सामने खड़ी है, जो गम्भीर व जटिल समस्या है। प्रदूषण को रोकने के बाद ही मानव-जीवन सुखमय, स्वस्थ व दीर्घायु बन सकेगा।

प्रश्न 11. कंप्यूटर खरीदने के लिए अपनी मां को पत्र लिखें। इस पत्र में कंप्यूटर खरीदने की आवश्यकता को रेखांकित करें।

उत्तर– 35 एकता इन्कलेव,
दिल्ली–110053
25 नवंबर, 1987

आदरणीय माताजी

चरण स्पर्श।

कल ही मुझे आपका पत्र प्राप्त हुआ जिसमें आपने मुझे अपनी किसी भी आवश्यक वस्तु को खरीदने की बात का जिक्र किया था। उस के संदर्भ में मैं आपसे कम्प्यूटर खरीदने की आवश्यकता को बताना चाहता हूं। मेरे पास एक कम्प्यूटर होना अनिवार्य है ताकि उसके माध्यम से आने शैक्षिक कार्यों को समय पर करते हुए अतिरिक्त सूचनाओं को भी प्राप्त कर सकूं। कम्प्यूटर का गहन मान दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है और यही हमें सर्वाशीघ्र विकास तथा सूचना व सुधार तकनीकी में भी सहायता प्रदान करता है। इसकी अत्यधिक उपयोगिता के कारण में एक कम्प्यूटर खरीदना चाहता हूं। जिसके लिए आप मुझे शीघ्रता ही मनीऑर्डर भिजवा दें ताकि मैं जल्द-से जल्द कम्प्यूटर खरीदकर अपनी पढ़ाई को अत्यधिक कुशलता से जारी कर सकूं।

आपका बेटा
नवनीत

प्रश्न 12. 'आतंकवाद के बढ़ते' चरण विषय पर 200 शब्दों में एक दैनिक समाचार पत्र के लिए संपादकीय लिखिए।

उत्तर– **'आतंकवाद के बढ़ते चरण'**

नई दिल्ली, 25 नवम्बर (विशेष संवाददाता)

आतंकवाद ने विभिन्न देशों के इतिहास पर बड़ा असर डाला है। उन्होंने राजा महाराजाओं, राजनेताओं, सरकारों और आरंभिक समय में राजवंशों के परिवर्तन को भी प्रेरित किया है। ऐसी घटनाएँ युद्धों की भी, यहाँ तक कि प्रथम विश्वयुद्ध का भी, कारण रही हैं। हालाँकि बहुत सी जानी-मानी आतंकवादी घटनाओं ने व्यक्तियों तथा राष्ट्रों के भाग्य को और शायद इतिहास के रुख को भी बदला है। 11 सितंबर की आतंकवादी घटना कई रुपों में अनूठी है। इसने एक सीमित युद्ध, यानी अफगानिस्तान में अमेरिकी हस्तक्षेप, को जन्म दिया और वह अफगानिस्तान से आगे अन्य देशों तक विस्तृत होगी अथवा नहीं, यह तो भविष्य ही बताएगा। आधुनिक विकसित हथियारों वाले देशों के बीच आधुनिक युद्धों की अवधि सामान्यत: सीमित होती है, क्योंकि यदि किसी विरोधी देश के पास अत्याधुनिक हथियार हैं या वे उनका इस्तेमाल करने का फैसला करते हैं तो भयानक विनाश की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। वर्तमान संकट के एक स्थायी विभाजन के रूप में स्थिर हो जाने की समस्या एक ऐसा पक्ष है, जिसका गहन विश्लेषण करने की जरूरत है। इसके लिए अमेरिका तथा पश्चिम देशों की ओर से अत्यंत समझदारी तथा मुस्लिम देशों की ओर से गहन आत्मविश्लेषण करने की आवश्यकता होगी, ताकि अतीत की त्रासदियों का दुहराव न हो। वर्तमान मामले में भौतिक कानून तथा कार्मिक कानून, दोनों की भूमिका है-क्रिया-प्रतिक्रिया, कारण और प्रभाव उन स्वदेशी जातियों का हुआ जिन्होंने पश्चिमी उपनिवेशवादियों का सामना किया, तो वह तात्कालिक और व्यापक प्रतिरोध होगा या, जहाँ तक विपक्षी के पास समान सैन्य-शक्ति नहीं होगी मामला लंबा खिंच सकता है। वर्तमान मामले में दूसरा पक्ष महत्त्वपूर्ण है, यदि धार्मिक आधार पर एक विशाल टकराव विकसित होता है। आनेवाले लंबे समय तक, विभिन्न देशों के बीच सैन्य असंतुलन आतंक द्वारा जबाव देने की परंपरा को बढ़ावा देगा और अमेरिका इतना शक्तिशाली बना रहेगा कि उसकी सैन्य-श्रेष्ठता की बराबरी करने का कोई मौका अन्य देशों के पास नहीं होगा।

इस प्रकार, प्रतिरोध की असमर्थता निर्बल पक्षों के दिलों-दिमाग में धीमा जहर भरने का काम करेगी। समय आने पर ऐसे जहर के विनाशक प्रभाव विपक्षी को दिग्भ्रमित करेंगे। यदि ऐसा होता है तो 11 सितंबर जैसी घटना फिर हो सकती है।

जब 11 सितंबर, 2010 को ओसामा बिन लादेन ने वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर आतंकवादी हमला किया तो वह खुद को आश्रय देनेवाले देश में अपनी कार्यवाही के परिणामों से बेखबर होगा या फिर उसे इसमें कोई मतलब नहीं था। इस कैलिबर और क्षमतावाले व्यक्ति को यह पता होगा कि अमेरिका इन हमलों का बदला लेने की प्रक्रिया में जितनी क्षति इस्लामी जेहाद को पहुँचा सकता है, उससे बहुत अधिक

नुकसान अफगानिस्तान को पहुँचा सकता है। फिर भी, यदि वह इस षड्यंत्र का वास्तविक सूत्रधार था तो उसने पाकिस्तान के अपने शुभचिंतकों और अन्य अज्ञात समर्थकों की मदद से एकाग्रचित होकर अपना लक्ष्य प्राप्त किया। वह उस सजा से बेखबर नहीं बल्कि लापरवाह था, जो इस्लामी आतंकवाद जारी रहने पर निश्चित रूप से प्राप्त होगा। बुद्धि या समझ का अभाव नहीं था, बल्कि मसीहा बनने का जोश था। उसने निर्णय की शक्ति को अवरुद्ध कर दिया था। बाद में क्या हुआ, यह सभी को पता है और क्या हो सकता है यह अटकलबाजी का विषय है।

अमेरिकी राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू. बुश ने इस्लामी जेहाद द्वारा सामने रखी गई चुनौती की प्रतिक्रिया में अपने देश के प्रयास को लामबंद करने के लिए प्रभावी और बलपूर्ण नेतृत्व प्रदान किया। उन्होंने बदला लेने का वादा किया और अपना यह वादा पूरा किया। वह एक आँख के बदले एक आँख से कहीं अधिक था। उनके देशवासियों ने इसके लिए उनकी प्रशंसा की। इस प्रशंसा के साथ बुश ने एक व्यक्ति और एक राष्ट्रपति के रूप में अपनी स्थिति मजबूत की। इस प्रक्रिया में उन्होंने वही मसीहाई छवि विकसित की, जिसने इस्लामी जेहाद की शक्तियों को अमेरिका पर आक्रमण करने के लिए प्रेरित किया। वे नहीं जानते थे कि रुकना कहाँ है। पूरी दूनिया इस आशंका के साथ अमेरिकी राष्ट्रपति की इस असमर्थता को देख रही है कि किस सीमा-रेखा के बाहर उनका आतंकवाद-विरोधी अभियान आतंकवाद की कार्रवाहियों से अधिक खतरनाक हो सकता है। अमेरिका के विरोधी उसे नहीं रोक सकते। उसे केवल उसके सहयोगियों द्वारा ही नियंत्रित किया जा सकता है।

प्रश्न 13. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और इसके आधार पर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

स्थापत्य कला की तरह मूर्ति कला का आरंभ भी भारत में हड़प्पा सभ्यता से माना जा सकता है। स्थापत्य और मूर्ति दोनों कलाओं में हड़प्पा के बाद के अवशेष प्राय: मौर्यकाल (325-188 ई.पू.) या उससे कुछ पहले के मिलते हैं। मूर्तिकला में भी समय-समय पर परिवर्तन होते रहे हैं और नयी-नयी शैलियाँ अस्तित्व में आती रही हैं। मौर्यकाल की मूर्तिकला में यथार्थत और आकर्षक सौंदर्य अभूतपूर्व है। अशोक कालीन मूर्तिकला इसी युग की है। मौर्यकाल के बाद शुंग (150-73 ई.पू.) और शक-कुषाण काल (ई. पू. पहली सदी–300 ई. तक) में मूर्तिकला का विकास हुआ। शुंगकला उतनी यथार्थपरक नहीं है। इन दोनों कालों में पत्थर और मिट्टी दोनों का उपयोग हुआ। कुषाणकाल की मथुरा में पाई गई यक्षिणियों की मूर्तियां विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं, जिनमें सामाजिक जीवन के आनंद और उल्लास को प्रत्यक्ष देखा जा सकता है।

बुद्ध की समाधिस्थ मूर्तियां मूर्तिकला की अमूल्य संपदा है। गंधार प्रदेश (अफगानिस्तान) में ग्रीक कलाकारों ने अपनी शैली से जिन भारतीय विषयों, अभिप्रायों, प्रतीकों का कलात्मक रूपायन किया, उन्हें गंधार शैली के नाम से जाना जाता है। कुषाणकाल में ही गद्य शैली का विकास हुआ था। इस शैली की सभी मूर्तियां सिर्फ बौद्ध स्थलों से उपलब्ध हुई हैं। बुद्ध मूर्तियां गुप्तकाल (275-500 ई.) में भी निर्मित हुईं। इनमें सारनाथ की धर्मचक्र प्रवर्तन मुद्रा में बैठी बुद्ध मूर्ति शिल्कला एवं सौंदर्य प्रभाव में अद्वितीय है। वस्तुत: मूर्तिकला के विकास में बौद्ध धर्म का योगदान उल्लेखनीय है।

हिंदू धर्म में मूर्ति पूजा वैष्णव भक्ति का मुख्य आधार रही है। ईश्वर के साकार रूप की आराधना के लिए मूर्ति को ही ईश्वर मानकर उसकी पूजा-अर्चना वैष्णव भक्ति का मुख्य अंग है। ईश्वर के विभिन्न अवतारों तथा अन्य देवी-देवताओं की मूर्तियों का निर्माण काफी लंबे समय से होता रहा है। दूसरी-तीसरी शताब्दी के बाद से हिन्दू धर्म के पौराणिक देवी-देवताओं की मूर्तियां मिलने लगती हैं। शिव, पार्वती, विष्णु, लक्ष्मी आदि की मूर्तियां इस दृष्टि से दर्शनीय हैं।

प्रश्न 1. भारत में मूर्तिकला का आरंभ कब से माना जाता है।

उत्तर–*मूर्ति कला का आरंभ भारत में हड़प्पा सभ्यता से माना जाता है।*

प्रश्न 2. मौर्य काल और कुषाण काल की मूर्ति कला का अंतर बताइए।

उत्तर–मौर्यकाल की मूर्तिकला में यथार्थता और सामर्थक सौंदर्य का सम्मिश्रण है, जबकि कुषाणकाल की मूर्तियों में सामाजिक जीवन के आनंद और उल्लास को देखा जा सकता है।

प्रश्न 3. गंधार शैली की विशेषताएं बताइए।

उत्तर–कुषाणकाल में ही गंधार शैली का विकास हुआ था। इस शैली की सभी मूर्तियां सिर्फ बौद्ध स्थलों से उपलब्ध हुई हैं।

प्रश्न 4. बुद्ध की मूर्तियों के निर्माण में किन-किन शैलियों का इस्तेमाल हुआ?

उत्तर–इनके निर्माण में गंधार शैली तथा ग्रीक शैली का इस्तेमाल हुआ है।

प्रश्न 5. भारतीय मूर्तिकला के विकास में हिन्दू धर्म के योगदान का उल्लेख कीजिए।

उत्तर–ईश्वर के विभिन्न अवतारों तथा अन्य देवी-देवताओं की मूर्तियों का निर्माण काफी लंबे समय से होता रहा है। दूसरी-तीसरी शताब्दी के बाद से हिन्दू धर्म के पौराणिक देवी-देवताओं की मूर्तियां मिलने लगती हैं। शिव, पार्वती, विष्णु, लक्ष्मी आदि की मूर्तियां इस दृष्टि से दर्शनीय हैं। ■■